जापान-भारत संघ और जापान भारत संसदीय मित्रता लीग द्वारा आयोजित स्वागत समारोह पर प्रधानमंत्री का भाषण

23 अक्तूबर,2008

आपके द्वारा भव्य शब्दों में किए गए स्वागत के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। वास्तव में मुझे भारत के बहुत से मित्रों से आतिथ्य सत्कार का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि आज मैं अपने देश के नागरिकों और भारतीय मूल के लोगों के बीच उपस्थित हूँ ।

मैं प्रधानमंत्री मोरी और प्रधानमंत्री फकुडा के इस अवसर पर उपस्थित रहने की तहेदिल से शुक्रिया करता हूँ । इससे भारत और जापान के गहरे रिश्तों की झलक मिलती है ।

मैं भारत के लिए तथा निजी तौर पर मेरे लिए व्यक्त की गई आत्मिक भावनाओं की तहेदिल से सराहना करता हूँ । मैं विश्वास दिलाना चाहूँगा कि भारत के लोगों में जापान से मित्रता का काफी महत्व है ।

जापान-भारत संगठन हमारे दो देशों के बीच एक शताब्दी से गहन सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा है ।

हमारे दूरदर्शी वरिष्ठ राजनेता जिन्होंने 1903 में इस संगठन की स्थापना की इस बात से आश्वस्त थे कि भारत और जापान इस नए एशिया के दो मजबूत स्तंभों के रूप में उभरेंगे । उनके प्रयासों के लिए हम शुक्रगुजार हैं कि प्रारंभिक वर्षों में शुरू हुई भारत और जापान के बीच यह भागीदारी विशेष कर आर्थिक क्षेत्र में, बढ़ी ।

भारत के कुछ महान सपूतों, दार्शनिक विवेकानंद विख्यात कवि रवींद्र नाथ टैगोर तथा उद्योग जगत में अग्रणी जमशेद जी टाटा और अन्य लोगों ने आधुनिक युग में जापान के साथ हमारे प्राचीन संबंधों को एक नई दिशा प्रदान की है ।

भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1950 के दशक के अंत में जापान को दौरा किया और इन दो लोकतांत्रिक देशों के मध्य चिरस्थायी दोस्ती के नए युग की आधार शिला रखी थी ।

हम जापान के आभारी हैं कि इन्होंने भारत को विशेष रूप से औद्योगिक आधुनिकीकरण के लिए विकास संबंधी सहायता प्रदान की है । पिछले साठ वर्षों में

हमने इन संबंधों को व्यापक एवं गहन बनाकर एक स्थायी उत्पादक भागीदारी में तब्दील किया है ।

अपने संबंधों के अगले चरण में, हम वैश्वीकरण के द्वारा तथा व्यापार, प्रौद्योगिकी, निवेश और लोगों के आपसी संपर्कों के प्रसार के लिए अपनी अर्थव्यवस्थाओं में सहक्रिया द्वारा प्रस्तुत सुअवसरों का दोहन करना चाहते हैं ।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री योशीरो मोरी के दिव्य दर्शी नेतृत्व में हमारे संबंधों का एक नया अध्याय आरंभ हुआ, जिसके बाद वर्ष 2000 में उनका महत्वपूर्ण भारतीय दौरा हुआ। हमारे द्विपक्षीय क्रियाकलापों के कायाकल्य और इन्हें सशक्त बनाने में उनके समर्पण की भावना के लिए और उनके द्वारा व्यक्तिगत तौर पर इस ओर ध्यान देने के लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं और उनके कार्यों की सराहना करते हैं ।

मैं जापान-भारत संसदीय मंत्री संघ तथा इसके अध्यक्ष श्री टैरो नाकायामा को व्यापक आधार वाली राजनीतिक सहमति के निर्माण में अहम भूमिका निभाने के लिए धन्यवाद देता हूँ जो भारत-जापान संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए दोनों देशों में विद्यमान है ।

आज विश्व अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है । वैश्विक अर्थ व्यवस्था में मंदी की काली छाया जो ऊर्जा, खाद्य मूल्यों में एकदम आई तेजी के कारण बहुत से विकासशील देशों में आर्थिक विकास की गति को मंथर कर रही है । आतंकवाद हमारे शांति प्रिय समाज के लिए एक खतरा है । जलवायु संबंधी परिवर्तन और पर्यावरणीय ह्रस भी हमारी इस खूबसूरत पृथ्वी के लिए खतरा है ।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हम जापान से विवेकपूर्ण परामर्श और नेतृत्व की अभिलाषा करते हैं । हम जापान के व्यापक विकासात्मक अनुभव और वैश्विक शांति तथा समृद्धि के मार्ग में खतरा बनी समस्याओं के समाधान के लिए इसके द्वारा अपनाई जाने वाली मतैक्य, सौहार्द और संतुलन की पारंपरिक प्रणाली अपनाने की इच्छा रखते हैं ।

मैंने 1971 के बाद से इस सुंदर देश का कई बार दौरा किया है । पिछले कुछ दशकों से मेरी इन संबंधों को समृद्ध और आगे बढाने की तीव्र इच्छा रही है। आज मैं भारत-जापान के संबंधों में आए इस परिवर्तन को देखकर अत्यधिक हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ । वर्ष 2000 में अपने दौरे के दौरान जैसा कि प्रधान मंत्री मोरी ने बल दिया था उसी प्रकार भारत-जापान के संबंध वास्तव में एक वैश्विक और राजनीतिक भागीदारी के रूप में विकसित हो रहे हैं ।

हमारे प्रबल द्विपक्षीय संबंधों के बूते पर ही हम आनुपातिक वैश्विक भूमिका अदा करने वाली दो बड़ी ताकतों के रूप में खड़े हैं । भारत का विश्वास है कि शक्तिशाली और सक्रिय जापान एशिया तथा विश्व में शांति और स्थिरता का सशक्त घटक है ।

मैं जापान में भारतीय समुदाय के लोगों के योगदान की सराहना करता हूँ। इन्होंने हमारे दोनों देशों के बीच मैत्री तथा आपसी समझबूझ के मार्ग प्रशस्त किए हैं । इसकी उपलब्धियों से भारत गर्वान्वित है और हम इन्हें जापान में रहने पर शुभकामनाएं देते हैं ।

मुझे विश्वास है कि आज यहाँ एकत्रित हम सभी अपने द्विपक्षीय संबंधों को दोगुना शक्तिशाली बनाने का प्रयास करेंगे जो हमारे दोनों देशों, एशिया तथा विश्व के लिए महत्वपूर्ण है ।

****